iJRASET
International Journal For Research in
Applied Science and Engineering Technology

INTERNATIONAL JOURNAL
FOR RESEARCH
IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 13 Issue: II Month of publication: February 2025

DOI: https://doi.org/10.22214/ijraset.2025.67012

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 13 Issue II Feb 2025- Available at www.ijraset.com

यक्षपूजा: कलात्मक अनुशीलन

डॉ0 कन्हैयाा सिंह
सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास
भ0प0पा0 पीजी कालेज, महाराजगंज, उ0प्र0

*सारांश: भारतीय ज्ञान परम्परा में धर्म, नौतिकता, सदाचार, विश्वकल्याण, समरसता, राष्ट्रप्रेम, सहानुभूति, पर्यावरण चेतना एवं देवी-देवताओं के विवधांकन का अद्भुत समन्वय परिलक्षित है। यहां प्राकृतिक एवं दैवीय, परा एवं अपरा शक्तियों को मूर्तरूप प्रदान किया गया, जिसके परिणामस्वरूप भारत में सनातन अथवा ब्रम्हण धर्म के प्रमुख देवी देवताओं के साथ ही लोक देवताओं का भी उल्लेख मिलता है। इन लोकदेवताओं को कहीं प्रमुख देवों के साथ प्रतिमा परिकर में तो कही स्वतंत्र शिल्पांकित किया गया है। इन दोनो रूपों में शिल्पकार ने प्रतिमाशास्त्रानुसार शिल्पांकित करने का प्रयास किया है। भारतीय धर्म में इन्हें दैवीय शक्ति के रूप में मान्यता प्राप्त है तथा समाज मेंं प्राचीन काल से ही पूजे जाते हैं। परन्तु पुराण एवं प्रारम्भिक साहित्य में देवत्व तथा कालान्तर में देवत्व की सीमा से परे रखा गया है। अर्थात इनको पृथक लोक शक्तियों के रूप में स्थान दिया गया है। पौराणिक व्याख्यानुरूप विष्णु पराण में इन्हें ही देवयोनियां माना गया है आठ प्रकार की देवयोनियों में सिद्ध, ग्रहाक, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, सर्प विद्याधर एवं पिशाच की गणना की गयी है।**1***

सिद्धगुटक गन्धर्व यक्ष राक्षस पन्नगाः।
विद्याधरा पिशाचश्च निर्दिष्टा देवयोनयः।।

I. बीज वाक्य- यक्ष, गन्धर्व, पिशाच, लोकदेवता, अर्थदेव, सेमीगाड्स, मंत्र, अपसरा आदि

टी0ए0 गोपीनाथ राव महोदय ने इन शक्तियों को सेमी गाड्स अर्थात अर्धदेव नाम प्रदान किया है एवं इनके अन्तर्गत वसु, नाम, साध्य, असुर, अप्सरा, पिशाच, वैताल, पितृ, ऋषिमुनि, गन्धर्व, तथा मरूदगण को माना गया है।2 इस प्रकार लोक देवी देवताओं के अन्तर्गत मुख्य रूप से उन शक्तियों की गणना की गयी है, जो प्रमुख देवों के ही समान गौण रूप से पूजे जाते हैं। हिन्दू मान्यता के अनुसार तर्पण के समय पढ़े जाने वाले मंत्र में इन सभी लोक देवों की नाम आ जाते है।3

देवायक्षास्तथा नामा गन्धर्वाप्सरसोसुराः।
क्रूराः सर्पाः सूपर्णश्च तरवोडजिमगाः खगाः
विद्याधराः जलाधरास्तधैवाकाशगामिनः।।

मथुरा संग्रहालय में संरक्षित इस प्रतिमाा में यक्ष को स्थूलकाय शरीर एवं सिंहताल ध्वज के साथ प्रदर्शित किया गया है जिसके दाहिने कंधे पर एक सिंह सादृश अंकन दिखाई पडता है। इससे चक्षु के वक्ष पर खजुर के पत्तों की आकृति जैसा अंकन भी मिलता है जिसके मस्तक के ऊपर का भाग टूटा हुआ है, एवं उभरी हुई आंखे सामने की ओर देखते हुए बनायी गयी हैं, तथा इसे विभिन्न प्रकार के आभूषणों से युक्त प्रदर्शित किया गया है। यह प्रतिमा सिहतालध्वज चामुंडा टीला मथुरा से प्राप्त हुआ है। जो प्रथम शदी ई0 की ज्ञात होती है।

धार्मिक साहित्य तथा शिल्प इन दोनों यक्षों का समान रूप से उल्लेख करता है। किन्तु प्राचीनता के सम्बंध में यक्षों की गणना हिन्दू धर्म में ऋग्वैदिक काल से ही प्राप्त होती है। ऋग्वैदिक काल में एक जगह मित्र एवं वरूण देव का यक्षों के प्रभाव से स्वतंत्र रहने की प्रार्थना की गयी है।4 अर्थात वैदिक काल में यक्ष प्रभवी होते थें। ऋग्वैदिक काल में एक अन्य जगह उल्लेख है कि अग्नि, यक्षों के अध्यक्ष हैं5 और अग्नि को उस स्थान पर जाने के लिए मना किया गया है। जहां यक्षो को पूजने वाले व्यक्ति रहते हों।6 इससे अनुमान लगा सकते हैं कि यक्षों के उपासक ऐसे व्यक्ति होंगे जो आर्य धर्म या वैदिकदेवों को न मानते हो। अर्थववेद में इनके लिए 'इतरजाना' विशेषण प्रयुक्त हुआ है। राज्य के सभी प्रमुख यक्ष देवों को सम्मान प्रदान कराने आते थे। इन्द्र, वरूण अर्थमान, आदि सभी वैदिक देवों के साथ ही यक्ष भी मिलते हैं। इनकी पुरी को ब्रम्हपुरी नाम देकर अपराजित कहा गया है।7 पाणिनी की अष्टाध्यायी में पुत्र की व्यक्तिगत नाम रखने कि लिए वरूण अर्यमान आदि वैदिक देवों के साथ शेवल, वैश्रवण का उल्लेख मिलता है। यक्षों के अनेक पवित्र स्थान भी थें, जिसमें कपिलवस्तु में यक्ष शाक्यवर्द्धन का चम्पा में यक्ष पूर्णभद्र का राजगृह मोग्गरपाणि का मंदिर प्रसिद्ध है।8 यक्ष का उल्लेख महाकाव्यों में भी मिलता है यथा रामायण9 में यक्षों द्वारा दिये जाने वाले वरदान यक्षत्व अमरत्वन्चा का प्रसंग प्राप्त होता है। महाभारत काल में इनको पूणतः देवत्व के पद पर स्थापित किया गया है। ब्रम्हण को यक्ष का प्रर्यायवाची कहा है। इसमें10 ब्रम्हमय नाम के एक ऐसे उत्सव का उल्लेख है जिसमें ब्राम्हण, क्षत्रियादि चारों वर्णों के लोग आनन्दपूर्वक भाग लेते थे। इनका क्रोध भी प्राणघातक होता था। इनके नगर को ब्रम्हपुर कहते हैं। यक्षों की उत्पत्ति एवं प्रतिमा विधान के सम्बंध में विष्णुपुराण11 एवं विष्णु धर्मेत्तर पराण12 में विस्तार से उल्लेख है। इसके अतिरिक्त यक्ष प्रतिमाओं का शिल्पाशास्त्रीय विधान दक्षिण भारतीय ग्रन्थों जैसे मानसार13 में भी श्याम तथा पीत वर्ण का उल्लेख है। यक्षों की सुन्दर

प्रतिमाएं मौर्य कला से मिलना आरम्भ हो जाते हैं। ऐसी प्रतिमाएं मथुरा सं्रगहालय, पटना संग्रहालय एवं जिला पुरातत्व विदिशा में संग्रहीत हैं। इसी प्रकार ग्वालियर के गुंजरी महल संग्रहालय में संग्रहीत एक मणिभद्र यक्ष की प्रतिमा उल्लेखनीय है। पावाया से प्राप्त तुण्दिल उदर यक्ष यक्षो वती उत्तरीय एवं गले में कोई वस्तु बधी है। प्रतिमा का दोनांे हाथ खण्डित है कला की दृष्टि से यह प्रतिमा लगभग प्रथम शदी ई0 की अनुमानित है। कुमार स्वामी ने अपने ग्रन्थ यक्ष में इनकी उत्पत्ति पूजा परम्परा एवं कला में प्रदर्शन का विस्तृत विवरण दिया है। इसी प्रकार श्री आर0पी0 चन्दा ने एक दर्जन से अधिक यक्ष प्रतिमाओं का वर्णन किया है। जैन साहित्य में यक्षों को देवता तो माना गया है किन्तु वे शासन देवता कहे गये हैं।14 भगवती सूत्र में पुण्यभद्र और मणिभ्रद शक्तिशाली देव माने गये हैं। देवताओं की सूची पुण्यभद्र, सीभ्भद्र, सुमणभद्र चक्षुरक्ष, सव्वन आदि की गणना हुई है। ये सभी वैश्रवण के आज्ञाकारी सेवक थे।15 दीर्घनिकाय16 में अच्छे और बुरे दो प्रकार के यक्ष कहे गये हैं। बुरे यक्ष अपने राजाओं के विरूद्ध उपद्रव करते थे। इनमें इन्द्र,17 साम, वरूण प्रजपित,18 मणिभद्र रावक है। वैश्रवण स्वयं जाकर उनको बतलाते हैं। कि कौन बुद्ध के विश्वास रखता है कौन नहीं19 इस प्रकार धीर-धीरे यक्षों का महत्व कम होता जा रहा था। उन्हें प्रमुख देवता न मानकर देवों का अनुचर माना गया उन्हंे उतनी प्रधानता न दी गयी जितनी पूर्व में दी जाती थी। प्रतिमा कला के अर्न्तगत यक्षों की अनेक सुन्दर प्रतिमाएं प्राप्त होती हैं। डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल ने यक्षों की कुछ सुन्दर प्रतिमाओं के उदाहरण दिये हैं। मथुरा जिले में परखम ग्राम में पाप्त यक्ष की प्रतिमा भारतीय कला भवन का उत्कृष्ट उदाहरण है। वह भारतीय वेषभूषा में है। कमर में लम्बी मेखला गले में ग्रवेयक हार तथा कानों में कुण्डल शोभित है। प्रतिमा में मुख की आकृति, भाव, भंगिमा आकर्षक एवं सुन्दर है।[20] पटना से प्राप्त हुई यक्ष की प्रतिमा के वस्त्र कुछ भिन्न तो अवश्य है किन्तु भारतीय हैं। इस प्रतिमा की सबसे बड़ी विशेषता है अंगों का संतुलन। सभी अंग बड़ी सुन्दरता से बनाये गये हैं, सिर पर उष्णीय है एवं शरीर खूब बड़ा है। अधोवस्त्र नीचे तक लटक रहा है। यह प्रतिमा अब इण्डियन म्यूजियम में है।[21] इसके अतिरिक्त मथुरा जिला के बड़ोदा ग्राम से यक्ष की झीग का नागरा स्थान से यक्षिणी की प्रतिमा प्राप्त हुई है।[22] भरतपुर जिले में नोह ग्राम में प्राप्त हई यक्ष की प्रतिमा भी बड़ी सुन्दर है।[23] भोपाल के समीप वेसनगर से प्राप्त हुई यक्षिणी की प्रतिमा बड़ी सुन्दर है। यह प्रतिमा इण्डियन म्यूजियम में है।[24] वेसनगर में एक और यक्षिणी की सुन्दर प्रतिमा प्राप्त हुई है। वहां उसका स्थानीय नाम तेलिन प्रसिद्ध है।[25] तीन मुख वाले यक्ष की प्रतिमा भी वाराणसी हिन्दु विश्वविद्यालय के भारत कला भवन में रखी है।[26] सोपारा स्थान से प्राप्त यक्ष की प्रतिमा अब नेशनल म्यूजियम में है।[27] अभी कुछ वर्ष पीछे उड़ीसा में शिशुपालगढ़ की खुदायी में यक्ष की अनेक प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं।[28]

भरहुत के स्तूप पर उत्तर दक्षिण पूर्व तथा पश्चिम के चारो द्वारों पर कुबेर के साथ ही अजकालक यक्ष तथा चन्द्रा यक्षी की भी प्रतिमाएं स्तूप पर अंकित है। पूर्व द्वार पर सुदर्शना यक्षी, दक्षिणी द्वारा पर विरूपक यक्ष के साथ अंकित यक्ष तथा चक्रवाक नागराज की और पश्चिमी द्वार के एक स्तम्भ पर सुचिलोमा यक्ष और सिरीया देवता की तथा दूसरे स्तम्भ पर सुखावत यक्ष की प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं।29 सभी प्रतिमाएं खड़ी हैं यक्ष के सिर पर उष्णीय कानों में कुण्डल तथा हाथो में कंगन है। उनके बायें स्कन्ध पर से चौड़ा पट्ट उपवीती ढंग से पड़ा है।30 यक्षिणी के शरीर पर खूब आभूषण है। कटि में पड़ी हुई मेखला बड़ी सुन्दर है। उसकी लड़े नीचे तक लटक रही हैं। पैरों में कड़े की तरह के आभूषण है। उनके कर्ण आभूषण खूब लम्बे लटकते हुए सुन्दर है।31 पूर्व मध्यकालीन यक्षों की अनेक प्रतिमाएं प्राप्त होती हैं। इसका उदाहरण मथ्ुारा पटना, बेसनगर भारतकला भवन वाराणसी इत्यादि पर देखी जा सकती है। मथुरा जिले के परखम ग्राम से प्राप्त यक्ष की प्रतिमा भारतीय कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह प्रतिमा भारतीय वेशभूषा एवं कमर में लम्बी मेखला, गले में ग्रैवेयक हार तथा कानों में कुण्डल से शोभित है। इसके हाथ खण्डित है, अतः आयुध स्पष्ट नहीं है। प्रतिमा के मुख की आकृति आकर्षक एवं सुन्दर है।32 पटना से प्राप्त हुई यक्ष की प्रतिमा की विशेषता अंगो का संतुलन है। सिर पर उष्णीय एवं भारी भरकम शरीर है। अधोवस्त्र नीचे तक लटकता हुआ दिखाया गया है। वर्तमान में यह प्रतिमा इंण्डियन म्यूजियम कलकत्ता में संग्रहीत है।33 इसी प्रकार गोमुख यक्ष भी उत्तर भारत से सूचित है। इस प्रकार की एक प्रतिमा गुजरी महल संग्रहालय ग्याविलयर में संग्रहीत है। इसमें द्विभुजी उत्कटिकाशन मुद्रा में प्रदर्शित है। हाथ में गदा एवं एक अन्य आयुध प्रदर्शित है। इस प्रकार गंधावल से प्राप्त यह प्रतिमा कला की दृष्टि से लगभग 10 वीं सदी ई0 की कृति है। इसी प्रकार का एक अन्य उदाहरण केन्द्रिय संग्रहालय इन्दौर में संग्रहीत है।

II. निष्कर्ष

भारत में यक्ष पूजा का विवरण वैदिक काल से ही मिलने लगता है, वाराणसी नगर का देखभाल दण्डपाणि अथवा हरिकेश नामक यक्ष एवं उनके चार सहयोगी यक्ष के आधीन माना गया है। पुराणों में कहा गया है कि भगवान शिव ने इस नगरी का भार यक्ष को सौपा था। वर्तमान समय में उत्तर भारत के प्रत्येक गांव में डीहबाबा या ग्राम्य देवता के रूप में यक्ष पूजा हेतु चौरा प्राप्त होता है। इसी प्रकार के अनेक सुन्दर यक्षिणी प्रतिमाएं मौर्य एवं मौर्येत्तर काल से मिलने लगती है। कहीं-कहीं कुबेर को भी यक्ष के रूप में मान्यता प्रदान की गयी है जो धन एवं वैभव के देवता हैं। परन्तु गाँव में अधिकांशतः मिट्टी के धूहा के रूप में संरचना मिलता है।

सन्दर्भ

[1] मिश्र, इन्दुमति, प्रतिमा विज्ञान, म0प्र0 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, वर्ष 2009 पृ0 335
[2] इ0एच0आई0- राव, टी0ए0गोपीनाथ, वा02 भाग 2, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी 1993, पृ0 549
[3] मिश्र, इन्दूमति, वही पृ0 335

[4] ऋ0 7.61.5
[5] वही 10.88.1
[6] वही 4.3.13
[7] मिश्र, इन्दूमति, वही पृ0 336
[8] मिश्र, इन्दूमति, वही पृ0 336
[9] रामायण 3.11.94
[10] महाभा0 आदि 152.18
[11] वि0पू0 1.15.42
[12] वि0ध0पु0 42.16
[13] मानसार 15.23
[14] उवासगदसाओं 93
[15] कुमारस्वामी-यक्ष, भाग एक पृ0 10
[16] महाविंश 31.81,
[17] यहां पर इन्द्र, शुक्र, का नाम न होकर यक्ष के नाम है।
[18] प्रजापति, पतैनी देवी के मंदिर में जोगिनी का नाम है।
[19] कुमारस्वामी, ए0के0-यक्ष, वाशिंगटन डीसी, 1911 पृ0 10,11
[20] अग्रवाल, वी0एस0, भारतीय कला, पृथ्वी प्रकाशन वाराणसी, 1996 पृ0 111
[21] चन्द, आर0पी0- फोर ए यक्ष स्टेचुज जे0डी0एल0 वा0 41921 पृ0 47-84
[22] अग्रवाल, वी0एस0 पूर्वोक्त पृ0 11
[23] उपरोक्त पृ0 12
[24] उपरोक्त पृ0 12
[25] उपरोक्त पृ0 13
[26] उपरोक्त पृ0 112
[27] उपरोक्त पृ0
[28] उपरोक्त पृ0 12
[29] उपरोक्त पृ0 134
[30] कुमारस्वामी-यक्ष पूर्वोक्त पृ0 २0
[31] उपरोक्त पृ0 २1
[32] अग्रवाल, वी0एस0 पूर्वोक्त पृ0 50
[33] मिश्र, इन्दुमति पूर्वोक्त पृ0 339

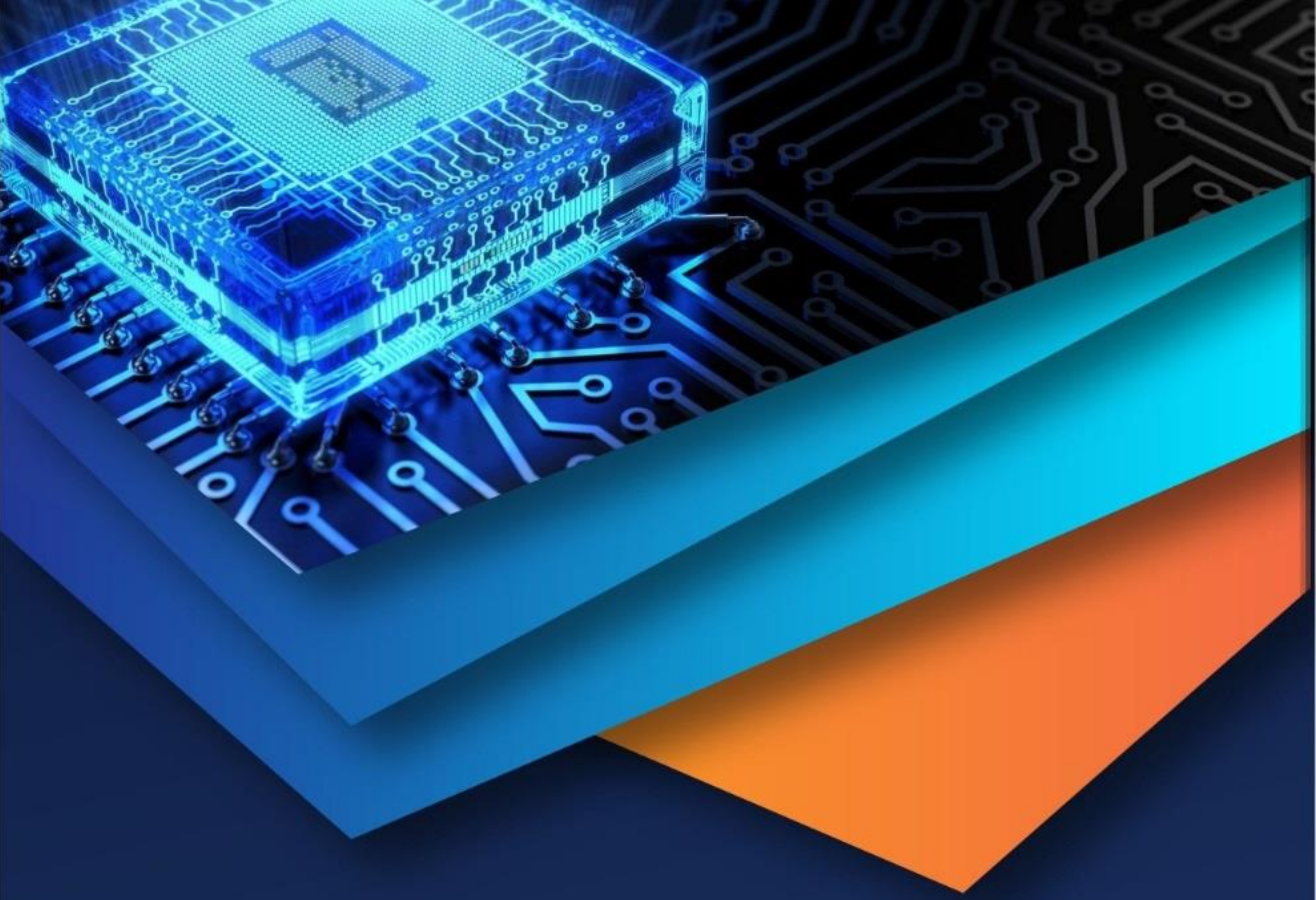

10.22214/IJRASET

INDEX COPERNICUS
45.98

IMPACT FACTOR:
7.129

TOGETHER WE REACH THE GOAL
IMPACT FACTOR:
7.429

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)